IJAER/May-June 2015/Volume-4/Issue-3 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

कालिदास के ग्रंथो में नारी सौंदर्य

सतीश कुमार सैन,
व्याख्यता संस्कृत,
राजकीय महाविद्यालय, किशनगढ

स्त्री पात्र समस्त काव्य की जीवनधारा होने के कारण जीवन का मर्मस्पर्शी मधुर रस सुख का मूल एवम् तीनों लोको का आधार रही है। आचार्य भरतमुन्नी ने नाट्यशास्त्र में नारी को सुख का मूल तथा काम भाव का अवलम्बन माना है। साथ ही भरत ने नायिका में उसके अंगों की सुंदरता के साथ–साथ उसके शील आचरण की पवित्रता जीवन की प्रकृति और अवस्था को विशेष महत्व दिया है जो नारी जीवन के आंतरिक और बाहरी सौंदर्य, सुकुमारता, पवित्र और स्नेहशीलता से विभूषित करते है।

अलंकारास्तु नाटयज्ञैरोयाः भावरसाश्रीयाः।
पावने आश्रयाधिकाः स्त्रीणां विकाराः वक्त्र गात्रजाः।। नाटयशास्त्र 22/4

नाटयशास्त्र में भरतमुनि ने नारी के शारिरीक रचना मन की सुदंरता, आकर्षण, रूप और स्वभाव का वर्णन करते हुए नारी के तीन प्रकार बताये है। उत्तम, मध्यम एवम् अधम। वात्स्यायन ने कामसूत्र में नायिकाओं का चार प्रकार से उल्लेख किया है पद्मिनी, चित्रणी, शंखनी और हस्तीनी। शास्त्रों के अनुसार सुंदर एवम् श्रेष्ठ नायिकाओं को भी श्रृंगार करना आवश्यक माना गया है। महाकवि कालिदास ने नारी के शारीरिक सौंदर्य को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि कालिदास ने स्त्रीत्व को अत्यधिक निकटता से देखा है। कालिदास ने अपने ग्रंथो में स्त्री पात्रों के रूप सौंदर्य के साथ–साथ अन्य गुणों का भी चित्रण किया है। कुमारसंभव नाम महाकाव्य में प्रथम सर्ग में जगत जननी पार्वती माता का वर्णन करते हुए कहा है कि बाल्यकाल में ही पूर्व जन्म के संस्कार के कारण इनमें सभी प्रकार की विद्याएं अवतीर्ण होने लगी थी। जैसे शीत ऋतु में गंगा में हंस मालाएं तथा रात्रि में हिमालय में औषधियां–

तां हंस मालाः शरदीव गंगा महौषधिं नक्तमिवात्मभासः। कुमारसंभव 1/30

शैशव अवस्था की समाप्ति पर पार्वती के शारीरिक सौंदर्य का स्वाभाविक वर्णन किया है उस समय पार्वती के शरीर की कल्पना तूलिका से रंग भर देने के कारण चित्र और सूर्य की किरणों से सम्पर्क से कमल

पुष्प। पार्वती के नख सिख सौंदर्य का वर्णन करते हुए कालिदास ने कहा है कि उनके चरण की कोमलता मानो नखो से अरूण आभा फूट पडी हो उनके चलायमान होने पर मानों कमल खिल उठे हों। कुमारंसभव

उन्मीलितं तुलिकयेव चित्रं सूर्यांशुंभिन्नमिवारविन्दम्।
बभूव तस्याः चतुरस्त्रशोभि वपुविभक्त नव यौवनैन।। कुमारसंभव 1/32

उनकी नाभि पर पडी सिलवटे ऐसा प्रतीत होता था मानों कामदेव के चढने के लिए सीढी हो।

मध्येन सा वेदविलग्न मध्या बलित्रयं चारूबभार बाला।
आरोहणार्थं नव योवनेन कामस्य सोपानमिव प्रयुक्तम्। कुमारसंभव 1/39

कालिदास ने विक्रमोर्वशीयम् नामक नाटक में कालिदास ने उर्वशी का सोंदर्य वर्णन करते हुए अलंकारों का भी अलंकार और सौंदर्य को भी सज्जित करने वाला उपमान कहा है।

आभरणस्य आभरणं प्रसाधन विधेः प्रसाधन विशेषः।
उपमानस्यापि सखे प्रत्युपमानं वपुस्तस्याः।। विक्रमोर्वशीयम् 2/3

पुरूरवा उर्वशी को देखकर कहता है यह उर्वशी उस बुजुर्ग ब्रह्मा की रचना नहीं हो सकती क्योंकि वृद्धावस्था के कारण इस प्रकार के रूप सौंदर्य का निर्माण नहीं कर सकता। श्रृंगार पति स्वयं कामदेव अथवा अत्यधिक पुष्प सम्पदायुक्त वसंत ने इसकी रचना की होगी।

अस्याः सर्ग विधौ प्रजापतिरभूच्चंद्रो नु कांतिप्रदः।
श्रृंगारैकरसः स्वयं नु मदनो मासो नु पुष्पाकरः। विक्रमोर्वशीयम् 1/10

कालिदास के सभी ग्रंथों में सभी नायिकाऐं अनुपम सौंदर्य युक्त है। विश्व प्रसिद्ध अभिज्ञान शाकुंतलम् नामक नाटक की नायिका शकुंतला अलौकिक सुदंरी एवम् मैनका पुत्री है। उसकी सुंदरता को देखकर राजा दुष्यंत कहता है कि मनुष्य जाति में इस प्रकार के सौंदर्य की उत्पति नहीं हो सकती।

मानुषीषु कथम् वा स्यादस्य रूपस्य संभवः।
न प्रभातरलम ज्योतिरूदेति वसुधातलात्ः।। अभिज्ञान शाकुंतलम 1/24

शकुंतला अस्पृष्ट यौवन की सुंदरता का प्राकृतिक उपमान के साथ वर्णन किया है।

अनाधृातं पुष्पम किसलयमलूनं कर रूहै।
रनाविद्धं रत्नम मधुनवम नास्वादितरसम्।
अखंडं पुण्यानाम् फलमिव च तदूरूपंमनगम्।
न जाने भोक्तारम कमिह समुपस्थास्यति विधिः।। अभिज्ञान शाकुंतलम 2/10

कालिदास के अनुसार आंतरिक गुणों के बिना शारिरीक सौंदर्य मात्र को सौंदर्य नहीं कहा जा सकता। रघुवंशम् महाकाव्य के छठे सर्ग में कालिदास ने राजकुमारी इन्दुमति की सुंदरता का अलौकिक वर्णन करते हुए कहा है कि वह विधाता की असाधारण रचना थी। रघुवंश 6/11 कालिदास के अनुसार वास्तविक सौंदर्य प्रति क्षण नवीन रूप में परिलक्षित रहता है।

क्षणै क्षणै यन्नवतामुपैति तदैव रूपम् रमणीयतायाः।

कालिदास ने मेघदूत खंड काव्य में यक्ष की पत्नी का सौंदर्य वर्णन करते हुए कहा है कि विश्व में यक्ष की पत्नी सौंदर्य में विश्व की पहली रचना है।

तन्वीश्यामा शिखरिदशना पक्वविम्बाधरोष्ठी।
मध्ये क्षाम्या चकित हरिणी प्रेक्षणा निम्न नाभिः।
श्रेणी भारादलसगमना स्तोक नम्रा स्तनानाभ्याम्।
या तत्र स्यादयुवति विषये सृष्टि राद्येवधातुः।। उत्तरमेघ 19।

इस प्रकार कवि अपने प्रतिभा से सहृदय के मन पर सौंदर्य की एक अमिट छाप या रेखा खींच देता है।

मालविकाग्निमित्रम् की नायिका मालविका के वर्णन में कवि कहता है कि नायिका का चित्रण करने में चित्रकार असफल रहा है। कालिदास की अधिकतर नायिकाऐं सम्पूर्ण कलाओं में निपुण है जैसे अनसूया और प्रियवंदा चित्रकला में इरावती और मालविका नृत्य में यक्ष पत्नी वीणावादन में उर्वशी नृत्य में और इन्दुमति ललित कलाओं में निपुण चित्रित की गई है। कालिदास के ग्रंथो में सभी नायिकाऐं प्रकृति प्रेमी है। पार्वति, सीता, शकुंतला, इन्दुमति, उर्वशी और उनकी सखियां जलसिंचन पशु पक्षियों की सेवा एवम् पालन स्वयम् करती

है। कालिदास के काव्य में केवल युवावस्था ही नहीं बल्कि कन्या, पत्नी व माता सभी की पूर्णता के दर्शन होते है। इनकी नायिकाएं आदर्श कन्या, आदर्श पत्नी व आदर्श माता की साक्षात् मूर्ति है। इन्दुमति के वियोग में राजा अज रोते हुए उसे उत्तम गृहिणी सचिव मित्र शिष्या आदि विभिन्न रूपों में स्मरण करते हुए दिखाई देते है। नायिकाओं में बाहरी सौंदर्य के साथ–साथ आंतरिक सौंदर्य का साक्षात दर्शन होता है। कालिदास की नायिकाओं के चरित्र में भारतीय सभ्यता, संस्कृति का अद्भुत सामजंस्य परिलक्षित होता है।